सर्व शिक्षा अभियान
सब पढ़ें सब बढ़ें
पढ़े भारत बढ़े भारत

पढ़ना है समझना

पढ़ने का कोना

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

पढ़ने का कोना

अच्छे साहित्य और प्रिंट के साथ छोटे बच्चों की शामिलियत (engagement) की महत्ता को अनदेखा नहीं किया जा सकता। बच्चों की उम्र, संदर्भ और रुचि के अनुसार किताबें पढ़ने के अवसर उपलब्ध कराते हुए पठन के साथ शामिलियत की पहल की जा सकती है और उसे सुदृढ़ बनाया जा सकता है। जब बच्चे शाला में प्रवेश करते हैं तो उनकी कक्षा में अच्छे साहित्य का संकलन यह संप्रेषित करता है कि पढ़ना मूल्यवान है और कक्षायी प्रक्रियाओं का एक अनिवार्य घटक है । पढ़ने का कोना एक ऐसा स्थान होना चाहिए जो बच्चों को आमंत्रित करे और उन्हें रोचक तस्वीरों, कहानियों, किताबों और अन्य पठन सामग्री को पढ़ने की प्रक्रिया में शामिल करे। कक्षा में बनाया गया पढ़ने का कोना शिक्षकों को वह मंच उपलब्ध कराता है जहाँ वे बच्चों की इस रूप में मदद करें कि वे पढ़ते समय अर्थ का निर्माण कर सकें। शिक्षक कक्षा के भौतिक स्थान को अनुकूल, जीवंत और पढ़ने के लिए आमंत्रित करने वाले स्थान के रूप में परिवर्तित कर सकते हैं।

1. कक्षा 1 और 2 में 'पढ़ने का कोना' की आवश्यकता

यह ज़रूरी है कि प्रारंभ से ही पढ़ने के लिए विविध प्रकार की किताबों से बच्चों का परिचय करवाया जाए और शाला के लिए इससे बेहतर शुरुआत हो ही नहीं सकती! बच्चों को वैविध्यपूर्ण किताबें उपलब्ध करवाई जानी चाहिए जिनके साथ वे स्वयं को शामिल कर सकें और आनंद के लिए पढ़ सकें। कहानियाँ, पढ़ने के लिए सार्थक संदर्भ का निमंत्रण देती हैं। कक्षा में पढ़ने का कोना बच्चों को विस्तृत पठन-सामग्री उपलब्ध कराता है और साथ ही एक स्वतंत्र पाठक बनने की प्रक्रिया में सहयोग देता है।

पढ़ने का कोना पुस्तकालय से अलग है, क्योंकि –

- यह एक ऐसा कोना है जो बच्चों से जुड़ा है और कक्षा का हिस्सा है जहाँ किताबों तक उनकी पहुँच बहुत सरल है।
- यहाँ बच्चों को अपने लिए अपनी पसंद की किताबें चुनने और आकर्षक तरीके से प्रदर्शित विभिन्न किताबों को पढ़ने की स्वतंत्रता है।
- यह बच्चों को स्वतंत्र रूप से पढ़ने और साथ ही सामूहिक पठन के अवसर उपलब्ध कराता है।
- पढ़ने का कोना शिक्षकों और बच्चों की साझा ज़िम्मेदारी है। 'पढ़ने का कोना' में किताबों के रख-रखाव और उनके इस्तेमाल की ज़िम्मेदारी बच्चों को दी जानी चाहिए।
- बाल साहित्य के साथ बच्चों की शामिलियत को पढने-लिखने संबंधी उनकी दिन-प्रतिदिन की कक्षायी प्रक्रियाओं का अभिन्न हिस्सा होना चाहिए।
- जब बच्चे साहित्य को पढ़ने और उसके साथ शामिल (engage) होने के अभ्यस्त हो जाएँ तो उन्हें शाला पुस्तकालय जाने के लिए प्रोत्साहित किया जा सकता है।

2. 'पढ़ने का कोना' का निर्माण

पढ़ने का कोना कक्षा में बच्चों के लिए एक ऐसी आनंददायी जगह है जहाँ वे इत्मीनान से बैठ सकें और पढ़ सकें। इसके लिए किताबें रखने और उन्हें सही तरीके से प्रदर्शित करने के लिए उचित स्थान की आवश्यकता होती है। इसके लिए किताबों को मेज़ के ऊपर या मेज़ के चारों तरफ बाँधी गई रस्सी पर प्रदर्शित किया जा सकता है या फिर दीवारों पर टाँगा जा सकता है। किताबों को प्रदर्शित करने के लिए रैक, शेल्फ़, गत्ते के डिब्बे या कोई अन्य तरीका इस्तेमाल में लाया जा सकता है। यदि कोई

शेल्फ़, फ़र्नीचर आदि इस्तेमाल में लाया जा रहा हो तो शिक्षक द्वारा यह सुनिशिचत किया जाए कि वह बच्चों के लिए सुरक्षित हो और किताबें बच्चों की पहुँच के भीतर हों।

कक्षा की तरह पढ़ने के कोने में भी समुचित प्रकाश हो। यदि कक्ष में प्राकृतिक रोशनी नहीं है तो उचित रोशनी का प्रबंध किया जाना चाहिए।

पढ़ने के कोने में बाल साहित्य का उत्कृष्ट संकलन होना चाहिए। बच्चों की आवश्यकताओं एवं रुचि और उपलब्ध बाल साहित्य की गुणवत्ता को ध्यान में रखते हुए बाल साहित्य का चयन बेहद सावधानी के साथ किया जाना चाहिए। साथ ही विधा, विषय-वस्तु, भाषा, चित्र, संवैधानिक मूल्यों और अन्य बिंदुओं को भी ध्यान में रखा जाना चाहिए। बच्चों की उम्र, उपयुक्तता और रुचि के अनुसार राष्ट्रीय शैक्षिक अनुंसधान और प्रशिक्षण परिषद् (एनसीईआरटी) द्वारा सुझाई गई बाल साहित्य की सूची (2008, 2013, 2014, 2015) में से किताबें पढ़ने के कोने में शमिल की जा सकती हैं।

http:/www.ncert.nic.in/departments/nie/dee/publication/Print_Material.html

पढ़ने के कोने में बच्चों के लिए क्रमिक पुस्तकमाला को भी रखा जा सकता है। क्रमिक पुस्तकमाला में अनेक प्रकार की कहानियाँ शमिल होती हैं जो कक्षा 1 और 2 के पाठकों के लिए कठिनता के विविध स्तर उपलब्ध कराती हैं। राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् (एनसीईआरटी) द्वारा प्रकाशित क्रमिक पुस्तकमाला 'बरखा' पढ़ते समय अनुमान लगाने का अवसर उपलब्ध कराती है। 'बरखा' की कहानियों का विकास बच्चों के रोज़मर्रा के अनुभवों के आधार पर किया गया है। बच्चे चित्रों से संकेत प्राप्त करते हुए पाठ्य-वस्तु के बारे में अनुमान लगाने के लिए अपने अनुभवों को प्रयोग कर सकेंगे।

बच्चे अपने पढ़ने के लिए स्वतंत्र रूप से किताबों को चयन कर सकते हैं। कक्षा में किताबों का समृद्ध संकलन होने से **प्रत्येक बच्चे को एक किताब उपलब्ध कराई जा सकेगी।** बच्चों के लिखने, तस्वीर बनाने और रंग भरने के लिए पढ़ने के कोने मे किताबों के अतिरिक्त पेंसिल, मिटानी (eraser), छीलनी (sharpener) आदि रखी जानी चाहिए।

3. पढ़ने के कोने का रख-रखाव

- पढ़ने के कोने का निर्माण और रख-रखाव शिक्षक और बच्चों द्वारा मिलकर किया जाना चाहिए ताकि बच्चों में शुरुआत से ही उसके 'अपने होने' की भावना का विकास हो सके।

- लिखने, तस्वीर बनाने और रंग भरने के उद् देश्य को ध्यान में रखते हुए वहाँ पेंसिल, रबड़, चार्ट पेपर और रंग आदि रखे जाने चाहिए।
- पढ़ने के कोने को कोई मज़ेदार-सा नाम भी दिया जा सकता है। किताबों के रखे जाने की जगह और उन्हें प्रदर्शित करने के तरीकों में भी समय-समय पर बदलाव किया जा सकता है।
- पढ़ी गई कहानियों के आधार पर बच्चों द्वारा किए गए लेखन या बनाई गई तस्वीरों को भी रखा जा सकता है।
- पढ़ने के कोने पर समय-समय पर नई किताबों, पत्रिकाओं और अन्य सामग्री को शामिल करने का प्रावधान किया जाना चाहिए।
- पढ़ने के कोने को व्यवस्थित करने की ज़िम्मेदारी बच्चों को दी जा सकती है।
- समय-समय पर किताबों की सँभाल भी की जा सकती है, जब किसी किताबों के पन्ने निकल जाएँ या फट जाएँ।

4. शिक्षकों की भूमिका

बच्चों को पढ़ने के लिए अभिप्रेरित करने में शिक्षकों की बहुत बड़ी भूमिका है। पढ़ने का कोना बना देना भर ही काफ़ी नहीं है। पढ़ने के कोने का रख-रखाव करने के लिए

बच्चों को प्रोत्साहित करने के अतिरिक्त भी कुछ ऐसी बातें हैं जिन्हें करके देखा जा सकता है-

- किताबों के वैविध्यपूर्ण संकलन को एक साथ रखना : शब्द रहित किताबें, चित्रात्मक किताबें, कविताओं के संकलन, जानकारीपरक किताबें, वर्ण और संख्या वाली रोचक किताबें।
- पढ़ने के कोने में से किताबों को पढ़कर सुनाना। शोध यह दर्शाते हैं कि बच्चे उन किताबों को पहले उठाते हैं जो उन्हें पढ़कर सुनाई जाती हैं। कहानी कहने के सत्र भी बच्चों को स्व-पाठक और लेखक बनने के लिए प्रोत्साहित करते हैं।
- जब कभी आप बोलकर पढ़ते हैं तब आप बच्चों को किताब के प्रति अपनी प्रतिक्रिया साझा करने के लिए प्रोत्साहित करें। उनकी बात सुनें और उन्हें एक-दूसरे की बात सुनने के लिए प्रोत्साहित करते हैं।
- स्वतंत्र पठन के लिए अलग से समय सुनिश्चित करें।
- शिक्षक स्वयं पाठक बनें और पढ़ने में अपनी रुचि को प्रदर्शित करें। स्वतंत्र पठन के लिए सुनिश्चित किए गए समय में अपने बच्चों के साथ पढ़े। यह प्रदर्शित करें कि पढ़ना एक रोचक गतिविधि है।
- पढ़ने के कोने में ऐसी किताबें भी रखी जा सकती हैं जो शिक्षक और बच्चों ने मिलकर बनाई हैं। बच्चे उन किताबों को पढ़ना पसंद करते हैं जो उन्होंने बनाई हैं। चूँकि वे इन किताबों की विषय-वस्तु से परिचित होते हैं इसलिए ये किताबें उन्हें पाठक होने का अहसास कराती हैं।

- पढ़ने के कोने के प्रदर्शन को कुछ खास बनाएँ जो बच्चों का किताबों की तरफ आकर्षित करेगा। बच्चों तक पहुँच बनाने के लिए किसी खास किताब या लेखक को केंद्र में रखें।
- उन किताबों अथवा सामग्री को शामिल करें जो पाठ्य-पुस्तक में दी गई अतंर्वस्तु (themes) का विस्तार करती हों। उदाहरण के लिए, यदि पाठ्य-पुस्तक में मानसून पर कोई कविता है तो बारिश पर आधारित कहानियों, कविताओं और यहाँ तक कि मौसम का अनुमान बताने वाली किताबों को पढ़ने के कोने में शामिल करें। बच्चों को समान अंतर्वस्तु पर और अधिक विविधतापूर्ण बातें जानने को मिलेंगी।
- पढ़ने के कोने को बच्चों के लेखन के साथ जोड़िए। बच्चों ने जो पढ़ा, उसकी प्रतिक्रिया में वे जो लिखते हैं, उन्हें प्रदर्शित कीजिए।

मथुरा जिला, उत्तर प्रदेश की शालाओं में पढ़ने का कोना

- मथुरा पायलेट परियोजना के हिस्से के रूप में पाँच सौ इकसठ शालाओं की कक्षा 1 और 2 में 'पढ़ने का कोना' बनाए गए थे।
- बच्चों के पढ़ने के लिए किताबें रखने और प्रदर्शित करने के लिए पर्याप्त जगह बनाने के लिए कोने का चयन किया गया था।
- हिंदी में चयनित बाल साहित्य के दो सेट पढ़ने के कोने में प्रदर्शित किए गए थे।

- राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् (एनसीईआरटी) द्वारा विकसित 'बरखा' क्रमिक पुस्तकमाला के दो-दो सेट प्रत्येक कक्षा में उपलब्ध कराए गए थे।
- 'बरखा' पुस्तकमाला को 'कलर कोड' वाले 'बुक होल्डकर' में रखा गया था।

- शिक्षक द्वारा बच्चों के लिखने और चित्र बनाने के लिए पढ़ने के कोने में कागज़, रंग और पेंसिल आदि रखी गई थीं।
- बच्चों के काम को दीवारों या प्रदर्शन पट (display board) पर प्रदर्शित किया गया था।
- शिक्षक पढ़ने के कोने से किताब लेकर कहानी सुनाते थे और पाठ्य-पुस्तक की कहानियों से उन्हें जोड़ते थे।

पढ़ना है समझना

प्रारंभिक साक्षरता कार्यक्रम
प्रारंभिक शिक्षा विभाग
गोविंद बल्लभ पंत ब्लॉक
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् (एनसीईआरटी)
श्री अरविंद मार्ग, नई दिल्ली – 110016
दूरभाष/ फ़ैक्स – 011-26863735/ 26863104
ईमेल – readingcell.ncert@gmail.com
For more details, visit our website www.ncert.nic.in